जनसत्ता 8 सितंबर, 2014: किसी हिंदी सूफी संत ने कहा है कि कुछ लोग अपने नाम के मुताबिक होते हैं या उसके खिलाफ।

अरबी में ‘ऐमन’ लफ्ज का तजुर्मा सीधा और ‘जवाहिरी’ का अर्थ घटना होता है यानी ऐमन जवाहिरी का अर्थ होता है ‘सीधे रास्ते पर चलने वाला’ या ‘सीधी घटना का कारक’। लेकिन आतंकवादी संगठन अलकायदा यह सरगना अपने नाम के एकदम खिलाफ है; उतना ही इस्लाम के खिलाफ, जिसके नाम पर वह हत्या, जुल्म और ज्यादतियों को जायज ठहराने की कोशिश कर रहा है।

अल जवाहिरी के बयान से अधिक इसके समय और परोक्ष घटनाओं का महत्त्व है। पहले जवाहिरी के जहर को समझते हैं। इस महीने की चार तारीख की सुबह जवाहिरी ने कहा कि उसने भारतीय उपमहाद्वीप में जिहाद के लिए अलग दुकान खोल ली है। ठीक एक साल बाद आए एक वीडियो संदेश में वह कहता है कि अलकायदा के नए उपसंगठन ‘जमात कायदत अल जिहाद फी शिबहि अलकुर्रत अलहिंदिया’ यानी ‘भारतीय उपमहाद्वीप में जिहाद के लिए अलकायदा’ का काम होगा कि जो सरहदें ब्रिटेन ने खींची थीं उन्हें मिटा कर एक खुदा के लिए लोगों को जमा करना।

भारत को खास निशाने पर रख कर बनाई गई इस आतंकी योजना में जवाहिरी इस्लामी खिलाफत की परिकल्पना के लिए म्यांमा, कश्मीर, इस्लामाबाद और बांग्लादेश के नाम क्रम से बोलता है और कहता है ‘हम अलकायदा में तुम्हें भूले नहीं हैं; हम तुम्हें अन्याय और जुल्म से आजाद करवाएंगे। यह संदेश तुम भारत के मुसलमानों के लिए है कि हमें तुम याद हो।’ जवाहिरी ने जिन इलाकों के नाम लिए हैं वे बर्मा, असम, गुजरात, अमदाबाद, बांग्लादेश, कश्मीर और इस्लामाबाद के हैं। किसी और राज्य और शहर पर जवाहिरी ने इतना ध्यान नहीं दिया जितना गुजरात और अहमदाबाद पर। क्या यह संदेश मोदी को सुनाने के लिए है?

भारतीय उपमहाद्वीप के लिए अलकायदा की इस नई दुकान के मुखिया और पाकिस्तानी नागरिक असीम उमर और उसामा महमूद ने मिल कर इस योजना का घोषणापत्र भी लिखा है। उमर अलकायदा के लिए प्रचार सामग्री तैयार करने का काम करता है। वह लोकतंत्र का पक्का दुश्मन माना जाता है और इसके खिलाफ हथियारबंद आंदोलन का समर्थक है। पिछले साल उसने भारतीय मुसलमानों के लिए सीधे संदेश जारी करते हुए कहा था कि तुम मुसलमानों ने भारत पर आठ सौ साल राज किया, तुमने ही एक ईश्वर का प्रकाश-पुंज जलाया और जब दुनिया का मुसलमान जागृत हो रहा है तो तुम पीछे कैसे रह सकते हो? इस्लामी खिलाफत के लिए मुसलमान नौजवानों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिए तो अब ऐसा क्यों नहीं हो सकता?

उमर अपनी जहरीली जुबान से नौजवानों को उकसाने के लिए पाकिस्तान में जाना-माना नाम है। पाकिस्तान अलकायदा और इस जैसे वहाबी आतंकवाद की प्रयोगशाला है। वहां विचार, हथियार, धन और दिशा-निर्देश सब बाहर से आते हैं। पाकिस्तान इन्हें अंजाम देने में लग जाता है। एक वक्त तक जिहाद के नाम पर पाकिस्तान या उसके बहकावे पर अफगानिस्तान के लोग ही फिदायीन आतंकवादी के रूप में दुनिया की नाक में दम किए हुए थे, लेकिन पिछली

गर्मियों में जब से अलबगदादी और इसकेसंगठन आइ□सआइ□स का उभार हुआ है यह भ्रम भी टूट गया है कि मरने वालों में पाकस्तिान और अफगानस्तिान केही ल□केहोंगे□

कनाडा से लेकर ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका से लेकर ब्रटिेन तक, तुर्की से लेकर भारत और अफ्रीका केसहारा रेगस्तिान से लेकर काकेशिया की बर्फ तक जतिने ल□केइब्न अब्दुल वहाब, सैयद कुत्ब और मौलाना अबुल आला मौदूदी की वचिारधारा पर मरने चले आ□ हैं उसने अलकायदा केवजूद को झक्झोर दयिा है□

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा दो अमेरिकी पत्रकारों की हत्या और इसका वीभत्स वीडयिो सामने आने केबाद और दबाव में आ ग□ हैं□ रपिब्लिकन सऊदी अरब केकरीबी हैं और आजकल डेमोक्रेट पार्टी केमाहरीन नेता कतर केसाथ पींगे ब□ा रहे हैं□ यह आइ□सआइ□स या अलकायदा की वर्चस्व की ल□ाई भर नहीं है□ यह अमेरिका की घरेलू राजनीति केअंतरराष्ट्रीय प्रतपि्ल भी है□ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसी महीने अमेरिका जा रहे हैं□ जाहरि है अलकायदा की ताजा धमकी केबाद स्वाभावकि रूप से प्रधानमंत्री की अमेरिकी यात्रा के□जेंडे में अंतरराष्ट्रीय आतंक्वाद से नपिटने का मुद्दा सर्वोपरि होगा□

जब से वहाबी आतंक्वाद सऊदी अरब और कतर केखेमों में बंटा है, गांव-गांव गली-गली वहाबी वरिासत का बंटवारा हो रहा है□ सऊदी अरब से पोषति इस्लामकि स्टेट केआतंक्वादयिों ने अलकायदा की न सरि्फ बर्बरता को पीछे छो□ दयिा है बल्कि भारत से अब तक इस संगठन में पहुंचे अठारह ल□कों ने भारत की जमीन में डे□ सौ साल पहले बो□ ग□ वहाबी पौधे केपहले फल देखे हैं□

उसामा बनि लादेन की मौत केबाद अलकायदा से छूटे और कई छोटे गुटों केनेताओं ने इस्लामकि स्टेट बनाया तो सऊदी अरब पोषति आतंक्वाद को नई ऊर्जा मलिी□ लेकनि अलकायदा केवफादार कतर की तानाशाह सरकार केकरीब आ ग□ हैं□ यानी जसि वहाबी आतंक्वाद का वैश्वकि बंटवारा हुआ है उस योजना केतहत अलकायदा और उससे जु□े स्थानीय आतंक्वादी संगठन, मदरसे और बौद्धकि खाद देने वाले मौलाना अब कतर को रपिोर्ट करते हैं□ भारत में यह बंटवारा स्पष्ट है और इसकेसाक्ष्य भी मौजूद हैं□ कतर केवफादार मौलाना सऊदी अरब केभा□े केवहाबी आतंक्वाद और वचिारधारा की आलोचना करते हैं और सऊदी अरब केतानाशाह अब्दुल्लाह और पूर्व खुफयिा प्रमुख बंदर बनि सुल्तान केवफादार कतर पोषति वहाबी आतंक्वाद की□

मोदी की अमेरिका यात्रा से पूर्व अलकायदा की धमकी दरअसल भारतीय आंतरकि सुरक्षा को कतर केपाले में धक्लने की कोशशि भी है□ इस पर मोदी की कट्टर हदिुत्ववादी छवि□ का भी भरपूर इस्तेमाल करने की कोशशि की जा रही है□ अलजवाहरिी की धमकी ने भारत की आंतरकि सुरक्षा संबंधी तैयारियों को नवीकृत करने केलि□ मजबूर कर दयिा है□

घरेलू आंदोलनों से परेशान और सऊदी अरब तानाशाह परविार केबेहद करीबी पाकस्तिान केप्रधानमंत्री नवाज शरीफ अलजवाहरिी की धमकी से और दबाव में आ ग□ हैं□ नवाज को कतर पसंद नहीं करता है□ तहरीकेतालबिान पाकस्तिान केप्रमुख फजलुल्लाह ने अलजवाहरिी केबयान का स्वागत कयिा है□ फजलुल्लाह केसाथ कई दौर की शांतिवार्ता कर चुके नवाज इसका समाधान नहीं नकिल पा□ हैं क्योंकि फजलुल्लाह आजकल कतर केखासमखास हैं□ जवाहरिी केबयान से पाकस्तिान को फौरी तौर पर सरि्फ इतनी राहत है कि पाकस्तिानी अवाम को वहाबी योजना केइतने गहरे मतभेद की जानकारी नहीं है और भारत-वरिोध केनाम पर कुछ दनि केलि□ उनका ध्यान बंट सक्ता है□

मिस्र में चुनी हुई मुसलमि ब्रदरहुड की सरकार के घोर वहाबी उर्फ सलफी □ जेंडे के चलते मिस्री जनता और तत्कालीन सेनाध्यक्ष और वर्तमान राष्ट्रपति फत्तह अलसीसी ने मुरसी को चलता कर दिया था□ अलसीसी को सऊदी अरब ने बहुत समर्थन दिया था लेकिन सीसी ने विचारधारा के अतिरिक्त सऊदी अरब की दी गई हर मदद लपक ली थी□ यह घटना सऊदी अरब की तरफ से कतर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दी गई सबसे बड़ी कूटनीतिक मात थी□ इजराइल और हमास के बीच संघर्ष उस वक्त चरम पर पहुंचा जब इस्लामिक स्टेट का आतंक सिर चढ़ कर बोल रहा था□

आजकल इजराइल सऊदी अरब के बहुत करीब है और कतर से बहुत दूर□ जैसे ही गाजा का संघर्ष थमा, इस्लामिक स्टेट फिर हावी हो गया□ भारत की नई सरकार इजराइल के बहुत करीब है और कई मसलों पर उसके साथ मिल कर चलना चाहती है□ लेकिन इससे क्या इजराइल के दुश्मन भारत के दोस्त बने रहेंगे? कतर की तानाशाही के नजदीक आ चुके अलकायदा की धमकी कहीं भारत के लिए□ इजराइल से बेपनाह मुहब्बत में मिला गम न साबित हो?

इस्लामी आतंकवाद से निपटने में सबसे बड़ा खतरा उस देश में सांप्रदायिक विद्वेष फैलने का भी रहता है□ मुसलमान आतंकवादियों को सजा दिए जाने के वहाबी तंजीमें मुसलमि दमन से जोड़ कर भरपूर जहर फैलाते हैं□ ऐसे में भारत का तरीका क्या होना चाहि□, जहां मुसलमानों की दूसरी सबसे बड़ी आबादी रहती है? चेचेन्या में कट्टरता का गैर-संस्थानीकरण किया गया और वहाबी विचार के खिलाफ दूसरे सबसे बड़े विचार को ताकत दी गई□ कोसोवो और चेचेन्या में वक्फ की मस्जदिों, मदरसों और संपत्तियों का प्रबंधन सूफी मत के लोगों को दिया गया□ तंजानिया ने वहाबियों को संवैधानिक संस्थाओं से बाहर किया और उदारपंथियों को जगह दी□ बांग्लादेश भी लगभग उसी तर्ज पर आगे बढ़ रहा है, मगर सऊदी अरब और कतर इस बात से बहुत खफा हैं□ इसीलिए□ बांग्लादेश में वहाबी 'स्लीपर सेल' उदारपंथियों की हत्याएं कर रहे हैं□ इन बातों में क्या भारत के लिए□ कुछ सीखने को है?

जवाहिरी का यह वीडियो सामने आने के पहले□ बाद गृह मंत्रालय और खुफिया □ जेंसियों की बैठक हुई और इस मुद्दे पर गहन विचार-विमर्श किया गया□ इन ज्ञानियों ने मिल कर उन्हीं फॉर्मूलों पर बात की होगी जिन्हें अब तक आजमा रहे हैं, उसके आगे वे जा भी नहीं सकते□ आज वहाबी आतंकवाद जितना विकृत, वीभत्स और विकराल हो चुका है उसकी सबसे बड़ी वजह वहाबी विचारधारा के संस्थानीकरण की है□ जिन्हें पत्तियां तोड़ने पर दरख्त के खत्म होने का भ्रम रहता है, उनका वह भ्रम अब भी कायम है□ जड़ों की जानकारी किसी आइबी या रॉ के पास नहीं है□ चेचेन्या के राष्ट्रपति रमजान कादिरोव के फॉर्मूले की जरूरत है□ जब समस्या इस्लाम के अंदर बिगाड़ करने से पैदा हुई तो इस्लाम के बाहर उसका निदान कैसे किया जा सकता है? खून में संक्रमण होने पर त्वचा पर क्रीम लगाने से मर्ज ठीक नहीं होता□

इस्लाम की बुनियादी बातों को बदल कर इस वहाबी विचारधारा का संस्थानीकरण किया गया है; इस्लाम में ही जो लोग इसके खिलाफ बुनियादी लड़ाई लड़ रहे हैं, वही इसका उपाय भी बताएंगे□ पत्तियां तोड़ने वाले माली कहलाते हैं और जड़ जानने वाले काश्तकार□ ईमानदार काश्तकार कभी धतूरे के बीजों को धान कह कर नहीं बोने देगा□ माली अपना कर्तव्य भूल भी जाए, लेकिन भारत समेत पूरी दुनिया के सूफी काश्तकार जानते हैं कि इस्लाम के बगीचे की जड़ें और बीज क्या है और अगर खरपतवार उग आए तो वह साफ कैसे की जाती है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने केलि क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta